लीनस पॉलिंग : जनता को समर्पित एक महान वैज्ञानिक

वैज्ञानिकों के बारे में यह आम धारणा प्रचलित है कि वे आम जनजीवन से कटे हुए, तमाम सामाजिक-राजनीतिक सरगर्मियों से अलग-थलग रहकर और प्रयोगशालाओं में "कैद" रहते हुए प्रकृति के रहस्यों को सुलझाने के लिए शोध-अनुसंधान में डूबे रहते हैं। अधिकांश वैज्ञानिक खुद भी अपनी भूमिका को इसी दायरे में स्वीकार कर अपने ढंग से एक सार्थक-रचनात्मक जीवन जीने का भ्रम पाले हुए सन्तुष्ट रहते हैं। लेकिन जब तक हम एक विषमतामूलक समाज के अंग हैं तब तक न तो विज्ञान समाज-व्यवस्था ओर शासक वर्ग के निहित स्वार्थों से मुक्त हो सकता है और न ही वैज्ञानिक का जीवन। विज्ञान और समाज के अन्तरविरोधों या दूसरे शब्दों में कहें तो शासक वर्गों के पूर्वाग्रहों-निहित स्वार्थों और वैज्ञानिकों के जीवन-आदर्शों की टकराहटों का इतिहास उतना ही पुराना है, जितना स्वयं विज्ञान का इतिहास। बीसवीं शताब्दी के महान वैज्ञानिकों में से एक लीनस पॉलिंग का समूचा जीवन और उनका कर्म विज्ञान और समाज के इसी अन्तरविरोध की एक कहानी है। 19 अगस्त 1994 को 93 वर्ष की आयु में उनका निधन हुआ था। एक महान रसायनशास्त्री के रूप में और विटामिन चिकित्सा के जनक एवं उत्साही प्रचारक के रूप में तो शायद बहुतेरे पढ़े लिखे लोग लीनस पॉलिंग के नाम से परिचित हों। लेकिन जीवन मूल्यों-आदर्शों और जनता के पक्ष की खुली हिमायत करने वाले एक सक्रिय राजनीतिक कार्यकर्ता के रूप में अमेरिका के बाहर वे ज्यादातर अनजान ही रहे हैं। उनका समूचा जीवन—एक वैज्ञानिक के रूप में और एक सामाजिक-राजनीतिक कार्यकर्ता के रूप में—विज्ञान और वैज्ञानिकों के बारे में आमतौर पर प्रचलित रूढ़ियों-विश्वासों के प्रति विद्रोह का एक प्रकाशस्तम्भ है, जो हमेशा आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित और ऊर्जस्वित करता रहेगा। लीनस पॉलिंग की महान जीवनयात्रा की एक झलक 'आह्वान' के पाठकों के लिए यहां प्रस्तुत है। - सम्पादक

खालिद

सात दशकों तक एक वैज्ञानिक के रूप में प्रकृति और उसकी निराली सन्तान—मनुष्य—के जीवन के रहस्यों से जूझते हुए और चालीस वर्षों तक एक सामाजिक- राजनीतिक कार्यकर्ता के रूप में मुनाफे और बाजार आधारित निहित स्वार्थों से जूझते हुए लीनस पॉलिंग ने दुनिया भर की जनता के बीच वह सम्मान और प्यार हासिल किया जो विरले ही हासिल होता है। वैज्ञानिकों की मंडलियों में आदरणीय और प्रिय होना उनके जैसी प्रतिभा के लिए कोई आश्चर्य की बात नहीं। लेकिन, नाभिकीय युद्धों और पर्यावरणीय विनाश विरोधी आन्दोलनकारियों के बीच, स्वास्थ्य और चिकित्सा कार्यकर्ताओं के बीच और उनकी वैज्ञानिक देनों से लाभान्वित अनगिन लोगों के बीच समान आदरभाव और प्रेम अर्जित करना लीनस पॉलिंग के असाधारण, बहुआयामी व्यक्तित्व की विशेषता थी। यह इसलिए सम्भव हुआ क्योंकि वे जनता के पक्ष में न केवल सोचते थे बल्कि इसकी खुली हिमायत करने के लिए हर जोखिम का सामना करने के लिए हमेशा तत्पर रहते थे।

यदि हम लीनस पॉलिंग को मिले वैज्ञानिक और लोकोपकारी पुरस्कारों की सूची बनायें तो कई पन्ने भर जायेंगे। अब की सबसे ज्यादा चर्चित इतिहास की वैज्ञानिक पाठ्यपुस्तक और 600 से अधिक वैज्ञानिक शोधपत्रों के लेखक पॉलिंग मौजूदा पूंजीवादी युग में विशेषज्ञों के विशेषज्ञ थे—एक ऐसे युग में जब विज्ञान और वैज्ञानिक प्रयोग पूरी तरह से विशेषज्ञों की गिरफ्त में हैं।

पॉलिंग उन लोगों में से नहीं थे जो समाज में प्रतिष्ठापूर्ण हैसियत अर्जित कर लेने के बाद अपने-अपने आदर्शों और मूल्यों से विचलित हो जाते हैं। वे अपनी प्रतिष्ठा को दांव पर लगाने में कभी पल भर भी नहीं हिचके। अपने इसी विद्रोही रवैये से वह अक्सर राजनीतिक और वैज्ञानिक विवादों में घिरे रहे। समाज के मठों और गढ़ों से उनपर निरन्तर तरह-तरह के हमले किये जाते रहे। उनका यह कहकर उपहास उड़ाया गया कि वह "हद से आगे जा रहे हैं" और "अपनी विशेषज्ञता के क्षेत्र का उल्लंघन" कर रहे हैं। लेकिन वह घिसे-पिटे, प्रतिक्रियावादी विचारों और संस्थाओं की हदों का अक्सर उल्लंघन करते रहे। उनकी यही तो विशिष्टता थी, जो तमाम रूढ़िपूजक वैज्ञानिकों के बीच उन्हें अनन्य बनाती है और हम जब भी लीनस पॉलिंग को याद करेंगे तो सबसे अधिक इसी चीज के लिए।

विज्ञान के क्षेत्र में नई राहों के अन्वेषक

विज्ञान के क्षेत्र में लीनस पॉलिंग की सक्रियता एक ऐसे वैज्ञानिक की सक्रियता थी जो बनी-बनायी लीकों पर चलने को वैज्ञानिक पोंगापन्थ मानता था। किशोरावस्था में ही पॉलिंग ने रसायनशास्त्र की प्रयोगशाला में प्रयोगों की शुरुआत कर दी थी। 1920 और 1930 के दशक में वह युवा वैज्ञानिकों की उस टोली के अंग बन गये जो भौतिकी की एक नयी शाखा "क्वाण्टम मैकेनिक्स" का विकास कर रही थी। उन्होंने रासायनिक द्रव्यों के अपने ज्ञान को क्वाण्टम मैकेनिक्स के साथ जोड़कर इस बारे में नयी खोजें कीं कि विभिन्न रसायनों के अणुओं की रचना के लिए परमाणु आपस में किस तरह जुड़ते हैं। अपने सहयोगियों के साथ मिलकर उन्होंने क्रिस्टलों, खनिजों एवं अन्य द्रव्यों को विश्लेषित करने के लिए नयी प्रयोगात्मक प्रविधियां विकसित कीं। इसके साथ ही उन्होंने रासायनिक बन्धों (chemical bonds) को भी समझने के लिए नयी प्रयोगात्मक प्रविधियों का विकास किया।

पॉलिंग की अनुसन्धान टोली के कामों ने यह समझना सम्भव बनाया कि अणुओं को एक दूसरे से अलग कैसे किया जाये और फिर से उन्हें नये रूप में व्यवस्थित कैसे किया जाये। इसने रसायनशास्त्र, आणविक जीवविज्ञान (molecular biology), आनुवंशिकी, औषधि विज्ञान और अन्य वैज्ञानिक क्षेत्रों में एक नयी क्रान्ति को जन्म दिया, क्योंकि अब अनेक प्रकार के रसायनों को तैयार करना सम्भव हो गया

था। पॉलिंग की प्रसिद्ध पुस्तक 'रासायनिक बन्धों की प्रकृति' (The Nature of Chemical Bonds) 1939 में छपकर आ चुकी थी।

1940 के दशक के आरम्भ में पॉलिंग ने अपना ध्यान जीववैज्ञानिक और चिकित्सा क्षेत्र की समस्याओं पर अधिकाधिक केन्द्रित किया। उन्होंने अपनी अनुसन्धान टोली के साथ सजीव वस्तुओं अर्थात जैविक अणुओं के अन्दर पाये जाने वाले कार्बन-आधारित द्रव्यों का विश्लेषण किया। हीमोग्लोबिन जो खून में आक्सीजन वहन करने वाला घटक है, ऐसा ही एक द्रव्य है। पॉलिंग इस खोज की दिशा में अपने मानवीय सरोकारों से प्रेरित हुए। दरअसल, वह अमेरिका के भीतर रहने वाले काले लोगों की खातिर कुछ सार्थक काम करना चाहते थे। इसलिए, उन्होंने sickel cell anaemia (एक प्रकार की खून की कमी सम्बन्धी रोग) के अध्ययन पर अपना विशेष ध्यान केन्द्रित किया। यह पश्चिमी अफ्रीकी मूल के काले लोगों में एक आनुवंशिक बीमारी के रूप में बहुतायत में पाया जाता है जो हीमोग्लोबिन में एक तरह की असामान्यतया से पाया जाता है। पॉलिंग के रासायनिक शोध ने इस बीमारी के इलाज का एक ज्यादा कारगर तरीका ढूंढ़ निकालने में मदद की।

पॉलिंग ने 'एण्टी-बॉडीज' और 'एनिस्थीसिया' (anti-bodies and anaesthesia) के बारे में भी नये सिद्धान्त विकसित किये। इसके अतिरिक्त उन्होंने डी.एन.ए. की संरचना को समझने में भी उल्लेखनीय योगदान किया।

लीनस पॉलिंग की वैज्ञानिक उपलब्धियों को मान्यता प्रदान करते हुए उन्हें 1954 में रसायन शास्त्र के लिए नोबेल पुरस्कार के लिए चुना गया। लेकिन, यह कुख्यात मेकार्थी काल था और पॉलिंग इस दौर की अमेरिकी सरकार की नीतियों के मुखर विरोधी के रूप में सामने आ चुके थे। असन्तुष्टों को तरह-तरह से उत्पीड़ित करने की कार्रवाइयों के शिकार पॉलिंग भी हुए। वे नोबेल पुरस्कार लेने यूरोप नहीं जा सके।

प्रयोगशाला से बाहर—युद्धविरोधी सक्रिय कार्यकर्ता के रूप में सड़कों पर जनता के साथ

द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान लीनस पॉलिंग ने अमेरिकी सरकार के सैन्य अनुसन्धान कार्यों में देश के तमाम वैज्ञानिकों की तरह शिरकत की, हालांकि वे परमाणु बम परियोजना के साथ प्रत्यक्ष रूप से नहीं जुड़े थे। अपने तमाम समकालीन प्रयोगशील वैज्ञानिकों की तरह उन्होंने ने भी विश्व युद्ध के दौरान अमेरिकी युद्ध मशीनरी के लिए अपने कार्य को इस आधार पर न्यायसंगत ठहराया कि जर्मन युद्ध मशीनरी मानवता के लिए ज्यादा बड़ा खतरा है।

लेकिन विश्वयुद्ध की समाप्ति के बाद युद्ध विजेता के रूप में उभरा अमेरिकी साम्राज्यवाद मगरूर होकर जब अपनी परमाणु क्षमता का इस्तेमाल दुनिया पर धौंसपट्टी जमाने लगा तो पॉलिंग बेहद उद्विग्न हो उठे। कई अन्य प्रमुख अमेरिकी वैज्ञानिकों के साथ वह भी यह महसूस कर गहरी वेदना से भर उठे कि उन्होंने भीषण संहारक हथियार बनाने में मदद पहुंचायी है। एक प्रतिबद्ध राजनीतिक कार्यकर्ता और अपनी पत्नी ऐवा हेलेन मिलर से प्रभावित होकर पॉलिंग सक्रिय राजनीतिक जीवन में खिंच आये।

पॉलिंग ने वैज्ञानिक बिरादरी की प्रगतिशील हस्तियों, अल्बर्ट आइन्सटाइन और बैरी कॉमनर जैसे लोगों के साथ मिलकर नाभिकीय युद्ध के खतरों के प्रति दुनिया को आगाह किया। उन्होंने परमाणु बमों से होने वाले सामाजिक, स्वास्थ्य एवं पर्यावरण सम्बन्धी विनाशों के बारे में सूचनाएं एकत्र करने में मदद की। पॉलिंग ने उन लोगों के साथ मिलकर, जो परमाणु हथियारों के परीक्षण, विकास और उपयोग का विरोध करने वाले लोगों के साथ मिलकर एक अन्तरराष्ट्रीय आन्दोलन का निर्माण करने में सक्रिय सहयोग दिया।

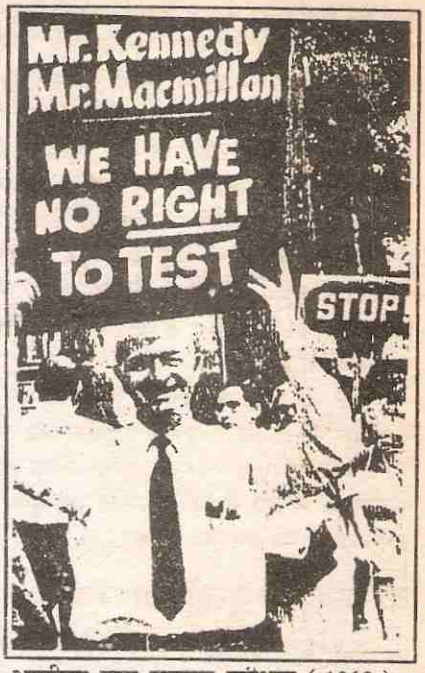

अमरीका द्वारा परमाणु परीक्षण (1962) के विरोध में व्हाइट हाउस के निकट एक प्रदर्शन में भाग लेते लीनस पॉलिंग

उन्होंने मैकार्थीकाल के सोवियत विरोधी अभियान में शामिल होने से साफ इन्कार कर दिया।

अमेरिकी अधिकारियों को पॉलिंग का यह रुख और तमाम सामाजिक सक्रियताएं आंखों में चुभने लगीं। पॉलिंग पर अधिकारियों ने कम्युनिस्टों का हमदर्द होने का आरोप लगाकर उनकी आवाज को दबाने की तरह-तरह से कोशिशें कीं। सरकारी खुफिया अधिकारियों ने उनसे परमाणु बम विरोधी अभियान में शामिल अन्य संगठनकर्ताओं के नाम बताने के लिए दबाव दिया। लेकिन उन्होंने यह कहकर साफ नकार दिया कि **"मेरी अन्तरात्मा यह गवारा नहीं करती कि खुद को बचाने की खातिर मैं इन आदर्शवादी युवाओं को कुर्बान कर दूं। मैं हरगिज ऐसा नहीं करूंगा।"**

अमेरिकी अखबारों ने पॉलिंग की परमाणु बम विरोधी सरगर्मियों पर यह कहकर प्रहार किया कि उन्हें दूसरे मामलों के बारे में, खासकर राजनीति के मसलों पर, अपनी जुबान बन्द ही रखनी चाहिए। कुछ वर्षों बाद उन्होंने एक बार बताया कि इस तरह के हमलों के बारे में वे किस तरह महसूस करते थे : **"मैंने हमेशा यह माना है कि वैज्ञानिकों को अव्वल तो एक आम नागरिकों की जिम्मेदारियां निभानी चाहिए, लेकिन इसके साथ ही उनकी विज्ञान की समझदारी होने के कारण और खासकर समाज की उन समस्याओं की समझदारी होने के नाते जहां विज्ञान का करीबी रिश्ता होता है, अतिरिक्त जिम्मेदारियां होती हैं। साल-दर-साल मुझे यह बताया जाता रहा कि हो सकता है कि मैं रसायनशास्त्र के बारे में बहुत कुछ जानता होऊं लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि मैं विश्व राजनीति या आर्थिक या सामाजिक मसलों के बारे में भी जानता हूं, इसलिए बेहतर यही है कि मैं अपनी जबान बन्द रखूं। मैंने अक्सर इसका यह कहकर उत्तर दिया है कि अव्वलन तो मैं आपकी सलाह लेने से इनकार करता हूं और दूसरे यह कहकर कि बहुतेरे दूसरे ऐसे लोग—वकील, राजनीतिज्ञ आदि हैं जो इन मामलों के बारे में उतने ही अज्ञानी है जितना मैं, लेकिन फिर भी कोई उनसे यह नहीं कहता कि वे अपनी जबान बन्द रखें।"**

लेकिन 1956 में निकिता ख्रुश्चोव के नेतृत्व में सोवियत संघ में

पूंजीवाद पथगामियों ने जब सत्ता पर कब्जा कर लिया और समाजवाद को उखाड़ फेंका तो आगे चलकर इन तत्वों के साथ अमेरिकी साम्राज्यवादियों ने नये प्रतिक्रियावादी समझौते की दिशा में कदम बढ़ाये। नये सोवियत शासक "शान्ति" के नाम पर दुनिया की जनता को क्रान्तिकारी संघर्षों से विरत रहने की नसीहतें देने लगे। दोनों देशों के आपसी रिश्तों में आये इस बदलाव का असर लीनस पॉलिंग और अमेरिकी सत्ता के रिश्तों पर दिलचस्प ढंग से पड़ा। इस शान्तिकाल में अमेरिकी शासकों ने खुले नाभिकीय परीक्षण बन्द कर दिये। इस परिदृश्य में लीनस पॉलिंग को एक बार फिर नोबेल पुरस्कार से नवाजा गया—इस बार "शान्ति" के लिए—उनके नाभिकीय हथियार विरोधी सरगर्मियों के लिए।

साठ के दशक के उत्तरार्द्ध में दुनिया भर में चल रहे जनसंघर्षों ने लीनस पॉलिंग को अत्यधिक प्रभावित और उनके राजनीतिक विचारों का झुकाव वामपन्थ की ओर अधिकाधिक होता गया। उन्होंने अपने राजनीतिक विचारों से अनेक उभरते हुए युवा अनुसन्धानकर्ताओं और कार्यकर्ताओं को प्रभावित किया।

दो तरह के युद्धों का फर्क

ऐवा मिलर के साथ मिलकर उन्होंने वियतनाम युद्ध विरोधी सरगर्मियों में भी हिस्सा लिया। उन्होंने पूंजीवाद का खुलकर विरोध किया और समाजवाद की हिमायत की। लेकिन पॉलिंग अनेक युद्धविरोधी कार्यकर्ताओं की तरह शान्तिवादी विचारों के नहीं थे जो साम्राज्यवादी युद्धों और मुक्तियुद्धों को एक ही पलड़े पर रखते थे। पॉलिंग इन दो तरह के युद्धों के बीच फर्क करते थे। **नब्बे साल पूरे होने पर उनको बधाई देने वाले मित्रों में से किसी ने पूछा कि क्या किन्हीं भी परिस्थिति में हिंसा जायज है? पॉलिंग का जवाब था कि ऐसी परिस्थितियां हो सकती है जब उत्पीड़न को समाप्त करने के लिए हिंसा का सहारा लेना पड़े।**

अमेरिका की डेमोक्रेटिक और रिपब्लिकन पार्टियों के बारे में 1968 में की गयी उनकी एक टिप्पणी से उनके राजनीतिक विचारों की एक स्पष्ट झलक मिलती है। **"मैं इस पर विश्वास नहीं करता कि दलगत राजनीति, यदि इसमें बदलाव आता है तो भी... उस शैतानी तंत्र को समाप्त कर सकती है, जिसकी यह खुद एक अंग है। ... मैं अहिंसा में विश्वास करता हूं। लेकिन समस्या यह है कि हमारी सत्ता हिंसा में, बल प्रयोग में, नापाम बमों में, पुलिसिया ताकत में, हवाई बमबारी में, बी-52 और बी-58 जैसे युद्धक विमानों में, नाभिकीय हथियारों में और युद्धों में विश्वास करती है। जब तक यह सत्ता-प्रतिष्ठान निर्धारक कारक बना रहेगा हमारी इस उम्मीद का वास्तविकता में कोई आधार मौजूद नहीं है कि आने वाली क्रान्ति अहिंसक होगी।"**

चिकित्सा के क्षेत्र में प्रचलित रूढ़ियों के भंजक के रूप में

पूंजीवाद के अन्तर्गत मुनाफे के लिए दवाओं का व्यापार किया जाता है। दवाओं को बनाने, सर्जरी व अन्य उच्च तकनीक आधारित विशेषज्ञतामूलक खर्चीली पद्धतियों द्वारा अरबों रुपये कमाये जाते हैं। स्वास्थ्य और चिकित्सा विश्वव्यापी नेटवर्क से जुड़े निहित स्वार्थ इसीलिए किसी भी ऐसे नये आविष्कार के खिलाफ अपनी पूरी ताकत के साथ आ खड़े होते हैं। लीनस पॉलिंग ने जब स्वास्थ्य और चिकित्सा क्षेत्र की प्रचलित रूढ़ियों के खिलाफ जाकर विभिन्न रोगों की रोकथाम और इलाज की एक सस्ती एवं मानव शरीर के लिए ज्यादा अनुकूल वैज्ञानिक पद्धति के रूप में विटामिन थिरेपी का आविष्कार किया तो तमाम निहित स्वार्थी शक्तियों का उनके खिलाफ पिल पड़ना स्वाभाविक था।

साठ के दशक के उत्तरार्द्ध के भीषण राजनीतिक संघर्षों के दौर में, इन संघर्षों से पूरी तरह संपृक्त रहते हुए, पॉलिंग विटामिन थिरेपी के बिलकुल नये क्षेत्र में काम करना शुरू किया। उनके लिए यह वैज्ञानिक विवादों का और जनता के लिए संघर्ष का एक नया क्षेत्र भी साबित हुआ। पॉलिंग ने उन औषधियों में दिलचस्पी दिखायी जो शरीर में प्राकृतिक रूप से मौजूद द्रव्यों का उपयोग कर स्वस्थ बनाते हैं और बीमारियों का इलाज करते हैं। उनका विश्वास था कि विटामिन जैसे प्राकृतक रसायन के जरिये मानव शरीर की रोगों पर स्वयं काबू पानी की प्रतिरोध क्षमता को काफी हदों तक बढ़ाया जा सकता है।

अपने इसी विश्वास के आधार पर उन्होंने **मेगाविटामिन थिरेपी** का विकास किया। उन्होंने आमतौर पर चिकित्सा अधिकारियों द्वारा सिफारिश की जाने वाली 'रोजमर्रा के लिए जरूरी मात्रा" से अधिक मात्रा में लोगों को विटामिनों की खुराक देने की हिमायत की। जब पॉलिंग और उनके सहयोगियों ने मानसिक बीमारियों के इलाज के लिए विटामिनों के उपयोग सम्बन्धी अपने निष्कर्षों को 1973 में प्रकाशित किया तो अमेरिकी मानसिक रोग चिकित्सकों के एसोसियेशन ने उनपर तीखे हमले किये। इन सरकारी डाक्टरों ने कहा कि इस प्रकार की मेगा विटामिन थिरेपी बकवास है और इसके हिमायती फर्जी हैं।

यह समझना मुश्किल नहीं है कि पॉलिंग की इस खोज ने सरकारी चिकित्सा के मठाधीशों को क्यों बेचैन कर दिया था। जाहिर है कि इससे इन चिकित्सकों और बाजार एवं मुनाफे के चिकित्सा तंत्र से जुड़े तमाम निहित स्वार्थों की अंधाधुंध लूट पर बन आयी थी। पॉलिंग की मेगाविटामिन चिकित्सा विधि ने यह सम्भव बना दिया था कि सिर्फ रोजमर्रे की खुराक को बदलकर और सस्ते विटामिनों की खुराक को बढ़ाकर कई बीमारियों की रोकथाम और इलाज किया जा सकता है—बिना तरह-तरह की महंगे परीक्षणों की चकरघिन्नी से गुजरे हुए, बिना अपनी कमाई को तरह-तरह के विशेषज्ञों की तिजोरियों के हवाले किये हुए। पॉलिंग की इस सोच ने पूंजीवादी दवा-व्यापार से जुड़े तमाम निहित स्वार्थों और पुरानी धारणाओं को खुली चुनौती दे दी थी।

1970 में पॉलिंग की एक पुस्तक प्रकाशित हुई—'विटामिन सी एण्ड कॉमन कोल्ड' (विटामिन सी और साधारण जुकाम)। इस पुस्तक ने चिकित्सा जगत में तहलका मचा दिया। चिकित्सा अधिकारियों और दवा उद्योग ने पॉलिंग के शोध की खिल्ली उड़ायी और कुप्रचार अभियान चलाकर उसे निरर्थक साबित करने की भरपूर कुचेष्टा की। एक बार फिर पॉलिंग पर आरोप लगाया गया कि उन्होंने अपने क्षेत्र का उल्लंघन किया है। वह एक "प्रशिक्षित पोषण विशेषज्ञ" नहीं हैं। पॉलिंग ने इस प्रकार के आरोप लगाने वालों के बारे में विनम्रतापूर्वक सिर्फ इतना कहा कि **उनके प्रति इस शत्रुतापूर्ण रवैये का कारण "शायद यह है कि दवा कम्पनियों की एक प्राकृतिक द्रव्य के बारे में दिलचस्पी कम इसलिए है क्योंकि यह बेहद कम कीमत पर उपलब्ध है और इसे पेटेण्ट नहीं कराया जा सकता।"**

तमाम विरोधों के बावजूद पॉलिंग अपने निष्कर्षों पर दृढ़ थे और उन्होंने अनेक अध्ययनों द्वारा यह सिद्ध किया कि विटामिन सी की बड़ी मात्रा में खुराक लेने से साधारण जुकाम की सफलतापूर्वक रोकथाम की जा सकती है और यदि उचित मात्रा में शरीर में उसकी खुराक पहुंच जाये तो बार-बार होने से इसे रोका जा सकता है और उसकी तीव्रता कम की जा सकती है। दुनिया भर में लोगों ने पॉलिंग की इस

खोज को हाथोंहाथ लिया। उनकी पुस्तक अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर सर्वाधिक बिकने वाली पुस्तकों में शुमार की गयी और पॉलिंग का नाम घर-घर में आदर के साथ लिया जाने लगा। हालत यह हुई कि दवा की दुकानों में विटामिन सी की गोलियों का टोटा पड़ गया।

हर नयी वैज्ञानिक खोज पर विवादों का उठ खड़ा होना पॉलिंग के वैज्ञानिक जीवन की एक नियति सी बन गयी थी। पॉलिंग ने विटामिन थिरेपी के अमल को आगे बढ़ाते हुए जब यह निष्कर्ष निकाला कि कैंसर जैसे जानलेवा बीमारी का भी काफी हद तक सफलतापूर्वक इलाज करने में विटामिन सी काफी उपयोगी हो सकता है तो एक बार फिर बावेला उठ खड़ा हुआ। 1979 में जब इवान कैमरान के साथ मिलकर उन्होंने कैंसर और विटामिन सी पुस्तक लिखी तो एक बार फिर आधिकारिक चिकित्सकों ने इस नयी खोज को किनारे लगाने के लिए एड़ी-चोटी का पसीना एक कर दिया। उन्होंने कई "प्रयोगों" के जरिये इसे खारिज करने की कोशिश की। पॉलिंग ने इन प्रयोगों की ईमानदारी और विधि पर ही सवाल खड़े कर चुनौती दी। मुख्य धारा की मीडिया ने इस बार भी कुप्रचार अभियान में बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। इस बार वह और अधिक घटिया स्तर पर उतरकर विटामिन थिरेपी को नीमहकीमी नुस्खा बताया और पॉलिंग की एक सठियाये हुए एक ऐसे जीनियस के रूप में चित्रित किया जिसका दिमाग फिर गया है।

विज्ञान और तकनोलाजी के पैरों में पड़ी बेड़ियां तोड़नी ही होंगी

तमाम सत्ताधर्मी प्रतिष्ठानों और बाजार की निहित स्वार्थी शक्तियों द्वारा लीनस पॉलिंग के प्रति जो रुख अख्तियार किया गया वह न तो आश्चर्यजनक है न ही अस्वाभाविक। पूंजीवाद व्यापक जनसमुदाय और वैज्ञानिक अनुसंधान के बीच एक गहरी खाई पैदा करता है। यह वैज्ञानिकों को उत्पीड़ित जनता के जीवन से काट देता है। वैज्ञानिक अनुसन्धानों को जनता की विभिन्न जरूरतों को पूरा करने की दिशा में केन्द्रित करने के बजाय पूंजीवाद मुनाफे और युद्ध की जरूरतों के लिए विज्ञान को बंधुआ बना लेता है।

लीनस पॉलिंग ताउम्र स्थापित रूढ़ियों और निहित स्वार्थों को चुनौती देते रहे। उन्होंने जोखिम उठाने का साहस किया। वैज्ञानिक क्षेत्र के मठाधीशों द्वारा उनके निष्कर्षों को नकार देने के बाद वे सीधे जनता की अदालत में जाते थे, क्योंकि उन्हें जनता से प्यार था, उसके विवेक और न्यायप्रियता पर दृढ़ विश्वास था। एक सच्चे सत्यान्वेषी की तरह वे सच्चाई को जैसा महससू करते थे उसी रूप में लोगों के सामने ले जाने में कभी भी नहीं डिगे—चाहे नाभिकीय हथियारों के खतरों का मसला रहा हो, सामाजिक परिवर्तन की जरूरत का सवाल रहा हो या मेगाविटामिन थिरेपी की बात हो जनता के हितों के साथ उन्होंने कभी समझौता नहीं किया।

लीनस पॉलिंग का समूचा जीवन संघर्ष हमें पूंजीवाद के अन्तर्गत विज्ञान और समाज के अन्तरविरोधों को समझने और उन्हें सुलझाने के लिए हमारा मार्गदर्शन करता है। सर्वाधिक महत्वपूर्ण सूत्र जो हमें मिलता है, वह यह है कि विज्ञान और तकनोलाजी के पैरों में पड़ी बेड़ियों को तोड़ने के लिए हमें बाजार और मुनाफे पर टिके समूचे तंत्र को ध्वस्त करना होगा और एक नये उत्पादन तंत्र, राजकाज और समाज के बिलकुल नये ढांचे का निर्माण करना होगा।

●

विज्ञान बनाम पोंगापंथ

नेताओं के झूठ, घोटालों, हत्या-बलात्कार
और पुलिस फायरिंग की खबरों के बीच
अखबारों की सुर्खियों में आने लगा
एक महान वैज्ञानिक का नाम
टीवी के पर्दे पर दिखने लगीं उसकी छवियां
बरसों से व्हीलचेयर में सिमटा
उसका पंगु शरीर
लेकिन मस्तिष्क उड़ान भरता हुआ
ब्रह्माण्ड के अनंत विस्तार में
खोलता हुआ मानवीय जिज्ञासा के नये-नये द्वार
उठाता हुआ प्रश्न
और ढूंढ़ता हुआ उनके मेधावी उत्तर
मानो देता हुआ चुनौती उन शक्तियों को
जो बांध देना चाहती हैं
इंसान के शरीर को और मन को
जकड़ देना चाहती हैं उसे
वर्तमान और बीते हुए कल से.....
उसके लघु शरीर के सामने
बौनी पड़ जाती हैं विराट बाधाएं
वह जगाता है विश्वास इंसान की
और विज्ञान की ताकत में ।
कुछ भी नहीं है असम्भव
कुछ भी नहीं अलौकिक
कुछ भी नहीं है अबूझ
नहीं कुछ भी सवालों से परे
विज्ञान की मशाल लेकर इंसानियत
बढ़ती ही जायेगी अंधेरे का सीना चीरते हुए ।

लेकिन अभी तो टकराना है
पोंगापंथ के काले पर्दे से
ढहानी है अंधविश्वासों की दीवार....
महान वैज्ञानिक की तस्वीरों पर
जल्दी ही छा गये वे
जो खींच ले जाना चाहते हैं देश को सदियों पीछे
अंधी आस्था, अंधा विश्वास, अंधा उन्माद
गंजेड़ी-भंगेड़ियों के झुण्ड
'मंदिर वहीं बनायेंगे' के जुनूनी नारे
"भूकंप तो कुंभ क्षेत्र में आने वाला था
साधुओं के तप से खिसककर
गुजरात चला गया", जैसे अमृतवचन !
स्टीफन हाकिंग,
हैरान मत होना अगर कभी तुम सुनो
कि तुम्हारा व्याख्यान सुनकर लौटे
विज्ञान के प्रोफेसर ने
किसी सदाचारी-दुराचारी-बाल्टी-कड़ाही बाबा के
चरणों में लोट लगाई
और फिर पूरे बदन पर भभूत पोतकर
अपने पापों को गंगा में बहाने चला गया ।

विज्ञान और पोंगापंथ का ऐसा अद्भुत संगम
(जिसमें सरस्वती लुप्त है)
हमारी इस भारतभूमि की विशेषता है ।

(दिशा छात्र संगठन की
केन्द्रीय दीवार पत्रिका
'ज्वार' से साभार)